आरती – कुन्ज बिहारीजी की

आरती कुंज बिहारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की।। टेर।।
गले में वैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला।
श्री आनन्द कंद, मोहन ब्रजचंद, राधिका रमण बिहारी की।।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ....

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी–तिलक
चन्द्र सी झलक, ललित छवि, श्यामा प्यारी की।।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ....

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै, बजे मुरचंग, मधुर मृदंग,
ग्वालिनी संग, अतुल रति गोप कुमारी की।।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ....

जहाँ ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी श्री गंगा।
सुमिरन से होत मोह–भंगा, बसी शिव शीश, जटा के बीच।
हरे अघ–कीच, चरण छबी श्री बनवारी की।।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ....

चमकती उज्जवल तट रेनू, बज रही बृन्दावन बेनू।
चहुं दिसि गोपी ग्वाल धेनू, हँसत मृदु मन्द, चांदनी चन्द्र।
कटत भव–फन्द, टेर सुनु दीन भिखारी की।।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ....

आरती कुंज बिहारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की।। टेर।।